'डाक पंजियन सं. जयपुर सिटी/247/2018-20
स.प.सं. 66332/97

पथ-प्रेरक

पाक्षिक

वर्ष 23 अंक 8 04 जुलाई, 2019 कुल पृष्ठः 8 एक प्रतिः रुपए 7.00 वार्षिक : रुपए 150/-

विडंबनाओं का यह कैसा आरक्षण

केन्द्र सरकार ने अनारक्षित वर्ग के युवाओं के वर्षों के सपने को पूरा करते हुए आर्थिक आधार पर 10 प्रतिशत आरक्षण की घोषणा की। राज्य सरकार ने भी उसी आधार पर नोटिफिकेशन जारी कर अपने कर्तव्य की इतिश्री कर ली। केन्द्र की भाजपा नीत सरकार कहती है कि हमने आरक्षण दिया तो राज्य की कांग्रेसनीत सरकार कहती है कि हमारे मुख्यमंत्री महोदय ने सर्वप्रथम 14 प्रतिशत आरक्षण का प्रस्ताव पहले मुख्यमंत्री रहते भिजवाया था इसीलिए यह आरक्षण मिला। हम तो आपके और उनके सबके आभारी हैं कि आप सबने यह कृपा की लेकिन विडंबना यह है कि आप जो कह रहे हैं या हमें देने का दावा कर रहे हैं वह मिला नहीं है। वास्तव में तो आपका यह आरक्षण विविध प्रकार की विडंबनाओं को समाए हुए है इसीलिए इसे विडंबनाओं का आरक्षण कहा जा रहा है। तो माननीय आप और वे! आप दोनों ने जो देने का उपक्रम किया है वह आपकी ही परिभाषा में गरीबी रेखा से नीचे (बी.पी.एल.) घोषित हो चुके एक परिवार को नहीं मिलता क्योंकि उसके पास बंजर भूमि का एक टुकड़ा है जो 5 एकड़ से अधिक है। उसके पास उसके पूर्वजों द्वारा गांव में रखा हुआ एक 200 गज भूखंड है जिसके एक कोने में भी छोटा सा आशियाना बनाने में भी वह अक्षम है। जरा सोचिए एक तरफ तो आप इस आरक्षण की अहर्ताओं में मानते हैं कि जिसकी आय आठ लाख से कम है वह इसका अधिकारी है और दूसरी तरफ आप देख रहे हैं कि गरीबी रेखा से नीचे जीवन यापन करने वाला भी इसका अधिकारी नहीं है तो फिर कैसा आर्थिक आधार? माननीय आज के युग में शहर में रहने वाला एक सामान्य परिवार भी मकान किराए से बचने के लिए बैंक से लोन लेकर अपना आशियाना बनाता है चाहे उसकी वार्षिक आय 5 लाख ही हो लेकिन वह आपके द्वारा दिए इस आरक्षण के दायरे में नहीं आता क्यों कि उसके पास स्वयं का मकान है।

(शेष पृष्ठ 7 पर)

पांच महापुरुषों की जयंती

गुजराती ज्येष्ठ मास में महाराणा प्रताप, हरिसिंह जी गढुला, चन्द्रसिंह जी भांडवा, मनुभा बापू व हरभमजीराज बापू की जयंती आती है। गुजरात की श्री कच्छ काठियावाड़ गरासिया एसोसिएशन प्रतिवर्ष इन पांचों महापुरुषों की जयंती एक ही दिन एक साथ मनाती है। इस बार यह कार्यक्रम 16 जून को धंधुका तहसील के खरड़ गांव में रखा गया। वक्ताओं ने इन पांचों महानुभावों के बारे में विस्तार से जानकारी दी एवं इनके जीवन से प्रेरणा लेने की बात कही।

(शेष पृष्ठ 7 पर)

अर्थबोध की पुस्तक का विमोचन

पूज्य तनसिंह जी द्वारा रचित गीत साधक जीवन की सारभूत अनुभूति हैं। इनके पीछे छिपे पूज्य तनसिंह जी के भावों को उनके मार्ग पर चलने वाला साधक ही अपनी अनुभूति के बल पर समझ सकता है। वरिष्ठ स्वयंसेवक अजीतसिंह धोलेरा ने इन गीतों के अर्थ का बोध करवाने के लिए 'संघशक्ति' मासिक में एक शृंखला प्रकाशित करवाई थी। उनमें से कुछ चुने हुए गीतों के अर्थबोध का गुजराती अनुवाद उनके द्वारा एक पुस्तक में संकलित किया गया है। 16 जून को खरड़ में आयोजित जयंती कार्यक्रम में इस पुस्तक का विमोचन किया गया। अजीतसिंह जी ने शेष संघ साहित्य का भी गुजराती अनुवाद कर प्रकाशित करवाया है।

'गज्जु बन्ना पहुंचे संघशक्ति'

केन्द्र सरकार में केबीनेट मंत्री बनने के बाद केन्द्रीय जल शक्ति मंत्री गजेन्द्रसिंह महरोली 17 जून को अपने जयपुर प्रवास के दौरान संघ के केन्द्रीय कार्यालय 'संघशक्ति' पहुंचे एवं माननीय संघ प्रमुख श्री से आशीर्वाद लिया।

राव राजा कल्याणसिंह की 133वीं जयंती मनाई

(समाचार पृष्ठ 5 पर पढ़ें)

विधायकों से सहयोग मांगा

आर्थिक रूप से कमजोर वर्ग के आरक्षण की विसंगतियों को दूर करवाने के लिए विधानसभा के माध्यम से सरकार तक विषय को पहुंचाने के लिए विधायकों से सहयोग मांगने हेतु श्री क्षात्र पुरूषार्थ फाउंडेशन के सहयोगियों ने विभिन्न विधायकों से सम्पर्क किया। जयपुर के सहयोगियों ने उपनेता प्रतिपक्ष एवं पूर्व मंत्री राजेन्द्रसिंह राठौड़ से सहयोग मांगा। बीकानेर के सहयोगी पूर्व उच्च शिक्षा राज्य मंत्री भंवरसिंह भाटी से मिले। जालोर के सहयोगी पूर्व मंत्री एवं विधायक जोगेश्वर गर्ग व आहोर विधायक छगनसिंह राजपुरोहित से मिले। जैसलमेर के सहयोगी विधायक रूपाराम धणदे से मिले। **(शेष पृष्ठ 7 पर)**

प्रणेता से प्रेरणा

पूज्य तनसिंह जी श्री क्षत्रिय युवक संघ के प्रणेता हैं। उनका जीवन हम सब स्वयंसेवकों एवं सहयोगियों के लिए प्रेरणा का स्रोत है। उनके जीवन की हर घटना हमारे लिए दिशा दर्शक है जो हमें उनके मार्ग पर बढ़ने की प्रेरणा देती है। ऐसी ही प्रेरणादायी घटनाओं का संकलन पथप्रेरक के इस कॉलम में धारावाहिक रूप से प्रकाशित किया जा रहा है।

एक बार पूज्यतनसिंह जी से एक स्वयंसेवक ने 60 हजार रुपए मांगे। उन्होंने कारण पूछा तो बताया कि मुझे मेरी बेटी की शादी करनी है। उस समय बेटी की शादी में 60000 रुपए खर्च करना बड़ा खर्चा था। पूज्य श्री ने कहा कि मैंने अपनी पुत्री की शादी में भी 60 हजार रुपए खर्च नहीं किए, तुम्हें इसकी इजाजत कैसे दे सकता हूं? फिर दूसरी बात यह है कि यह राशि तुम्हारे पास है नहीं बल्कि तुम कर्जा लेकर खर्च करना चाहते हो। उनके बार-बार आग्रह करने पर उन्होंने पूछा कि तुम वापिस कैसे लौटाओगे? संतुष्टि पूर्ण जवाब नहीं मिलने पर उन्होंने मना कर दिया। पैसा मांगने वाले स्वयंसेवक से उन्होंने कहा कि तुम जहां पैसे खर्च करना चाह रहे हो वह मेरी नजर में उपयुक्त नहीं है और साथ ही तुम पैसे को वापिस कैसे लौटाओगे इसकी व्यवस्था भी नहीं है ऐसे में तुम्हें पैसे उधार क्यों दूं? पैसे मांगने वाले स्वयंसेवक ने जवाब दिया कि मैं आपका हूं इसलिए मुझे रकम उधार दें। पूज्य श्री का जवाब था कि तुम मेरे हो इसीलिए मैं तुम्हें पैसा उधार देकर खोना नहीं चाहता। यह था उनका अपनत्व। वे जिसे अपना समझते थे उसे सदैव अपना बनाए रखना चाहते थे। उसके साथ बिछड़ने की हर संभावना को दरकिनार रखते थे चाहे इसके लिए उन्हें कितना ही कठोर होना पड़े। साथ ही आर्थिक लेन-देन का दिशादर्शन भी यह घटना करती है। कोई अपना है, मित्र है और धन उधार मांगता है तो देने से पहले यह स्पष्ट कर लेना चाहिए कि वह लौटा पाएगा या नहीं। यदि ऐसा नहीं किया तो हम धन और मित्र दोनों को खो देंगे। अंग्रेजी साहित्यकार सेक्सपीयर ने लिखा है कि मेरे पास धन भी है और मित्र भी है। मैंने मित्र को धन उधार दिया तो मित्र और धन दोनों ही खो दिए। यह एक स्थिति है मित्रता और धन की लेकिन इसका अर्थ यह भी नहीं कि हम मित्र की सहायता न करें। मित्र का सहायक मित्र नहीं होगा तो कौन होगा लेकिन इसकी क्या मर्यादाएं हों? मित्र की आवश्यकता क्या है उसे समझें, क्या वे वास्तव में आवश्यकता हैं या आवश्यकता की आड़ में मित्र के मन की विकृतियों का पोषण है। साथ ही यदि मेरा मित्र मुझसे उधार मांग रहा है तो क्या उसकी वापिस चुकाने की स्थिति है? क्या वह वापिस नहीं चुका पाएगा तो भी मैं मित्रता बरकरार रख सकूंगा और यदि ऐसा है तो उतना ही उधार दूंगा जितना मैं वापिस न आने पर भी मित्रता बनाकर रख सकूंगा। कुछ ऐसी ही मर्यादाएं है मित्रता में आपसी आर्थिक व्यवहार की। पूज्य तनसिंह जी का जीवन मर्यादाओं की कहानी है। उन्होंने हर व्यवहार की मर्यादाएं निश्चित की और उनका कठोरता पूर्वक पालन कर वे अपने अनुगामियों के लिए व्यवहारिक मार्गदर्शक बने।

जीवनोपयोगी जानकारी

गतांक से आगे.... **- अभयसिंह रोडला**

(8) Certified Actuaries : एक्चुरियल साईन्स अथवा बीमांकिक विज्ञान वर्तमान में सबसे तेजी से बढ़ते क्षेत्रों में से एक है। यह बीमा क्षेत्र में सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण कार्यों का निर्वहन करते हैं। एक्चुरी का मुख्य कार्य जोखिम तथा अनिश्चितता की वित्तीय लागत का निर्धारण तथा विश्लेषण करना है। इनके विश्लेषण तथा निष्कर्षों के आधार पर कम्पनियां जोखिम-लागत को न्यूनतम करने हेतु नीति निर्धारित करती हैं। इनके आधार पर ही बीमा कम्पनियां अपने उत्पादों के प्रीमियम की कीमतें तय करती हैं। एक्चुरीज के कार्य करने के लिए अनेक प्रकार के बीमा क्षेत्र हैं यथा - स्वास्थ्य बीमा, जीवन बीमा, सम्पत्ति बीमा, पेंशन व सेवानिवृत्ति लाभ, उद्यम जोखिम आदि।

भारत में एक्चुरिज के लिए परीक्षा आयोजित करने तथा सर्टिफिकेट प्रदान करने हेतु अधिकृत संस्था Institute of Actuaries of India (IAI) है। यह Actuaries Act, 2006 के अधीन स्थापित एक वैधानिक निकाय है। Actuary बनने हेतु परीक्षा देने से पूर्व अभ्यर्थी को IAI का सदस्य बनना आवश्यक है। IAI का सदस्य बनने हेतु उसके द्वारा आयोजित प्रवेश परीक्षा ACET (Actuarial Common Entrance Test) को उत्तीर्ण करना अनिवार्य है। ACET परीक्षा में बैठने हेतु न्यूनतम अर्हता 12वीं कक्षा उत्तीर्ण करना है।

ACET में सफल होने के पश्चात् अभ्यर्थी को कुल 15 पेपर पास करने होते हैं जो संक्षेप में इस प्रकार हैं :

(i) CT Series - इसमें 9 पेपर सम्मिलित हैं। (ii) CA Series इसमें 3 पेपर सम्मिलित हैं। उपरोक्त दोनों में सभी पेपर पास करना अनिवार्य है।

(iii) ST Series - इसमें उपलब्ध 9 पेपर में से किन्हीं 2 का चयन कर उन्हें उत्तीर्ण करना होता है।

(iv) SA Series - इसमें उपलब्ध 6 पेपर में से एक का चयन कर उसे उत्तीर्ण करना होता है।

उपरोक्त 15 पेपर पास करने पर ही Qualified Actuary का प्रमाण-पत्र मिलता है, यद्यपि 5-6 पेपर पास करने के पश्चात् ही कार्य करना प्रारम्भ किया जा सकता है।

www.actuariesindia.org वेबसाइट पर इस संबंध में विस्तृत जानकारी प्राप्त की जा सकती है।

क्रमशः

'गुरु शिखर से' **(विविध विषयों का कॉलम)**

राजधानी के शिल्पकार

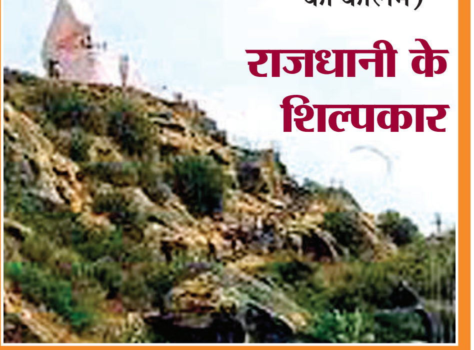

स्वरूपसिंह जिंझनियाली

जयपुर का राजघराना सदैव उच्च सत्ता का सागीद रहा है। मुगल काल में उनकी राजधानी रही फतेहपुर सीकरी व आगरा में यमुना नदी के किनारे ताजमहल बनाने के लिए शाहजहां को भूमि जयपुर राज परिवार ने दी थी। 1911 ई. में जब अंग्रेज भारत की राजधानी को कलकत्ता से दिल्ली लाए तब रायसीना हिल्स (पहाड़ी) के आसपास का इलाका जयसिंह पुरा कहलाता था। आज के इस लुटियन जोन में जहां नई राजधानी की नींव रखी गई थी यह भूमि जयपुर दरबार ने दी थी। तत्कालीन वायसराय का निवास रॉयल लीगल हाऊस (अब राष्ट्रपति भवन) में बना जयपुर टावर (स्तम्भ) इसी की याद दिलाता है। जब भारत आजाद हुआ ओर राजपूताना की छोटी बड़ी 22 शाही रियासतों को मिलाकर राजस्थान राज्य का गठन किया गया तब जयपुर के महाराजा सवाई मानसिंह द्वितीय को राजस्थान संघ का पहला राजप्रमुख (राज्यपाल तब राजप्रमुख कहलाता था) केन्द्र द्वारा नियुक्त किया गया। सिटी पैलेस के दरबार हॉल में सरदार पटेल ने उन्हें राजप्रमुख की शपथ दिलवाई।

अंग्रेजों के समय राजपूताना की राजधानी अजमेर थी एवं ग्रीष्मकालीन राजधानी माउंट आबू। नए राजस्थान के लिए राज्य की राजधानी बनाने के लिए अनेक शासकीय भवनों एवं विशाल भूमि की आवश्यकता थी जिसे पूरा करना नई सरकार के बस में नहीं था। दूर दृष्टा महाराजा सवाई मानसिंह ने केन्द्र सरकार को जयपुर को राजधानी बनाने का प्रस्ताव देकर प्रबल पैरवी की। उन्होंने भूमि भवन एवं अन्य इन्फ्रास्ट्रेक्चर सरकार को दिए। अन्ततः नए राज्य की नई राजधानी जयपुर नगर बना। महाराजा ने अपने वर्तमान के राजमहल पैलेस हॉटल वाले महल को राजप्रमुख का आवास निःशुल्क बनाया तथा खुद ने वेतन, भत्ते, गाड़ियां, नौकर इत्यादि सरकार से नहीं लिए। वर्तमान राजभवन, मुख्यमंत्री आवास एवं मंत्रियों के निवास जो आज सरकार के पास हैं, इन्हें राज्य को भेंट कर दिए। सिविल लाइन्स के भवनों के अलावा अन्य जगहों के भवन भी सरकार को आवास एवं कार्यालय के लिए दिए गए।

खुद की सेना सवाई मान गार्ड (अब भारतीय आर्मी में राजपूताना राइफल्स कहलाती है) का मुख्यालय (वर्तमान सचिवालय भवन) सरकार को उसके कार्यालय स्थापित करने बाबत भेंट कर दिया। चौगान (पोलो) स्टेडियम, सवाई मानसिंह स्टेडियम, सवाई मानसिंह मेडिकल कॉलेज एवं अस्पताल, 1947 में बना राजपूताना विश्वविद्यालय (अब राजस्थान विश्वविद्यालय) की सम्पूर्ण भूमि, जैल, मैयो अस्पताल (जनाना हॉस्पीटल), रेल्वे स्टेशन, खुद का निजी सांगानेर का हवाई अड्डा, आमेर एवं नाहरगढ़ के किले, अलबर्ट हॉल म्युजियम, राम निवास बाग, खासा कोठी, कचहरियां, सर्किट हाउस, यादगार भवन, आज का पुलिस कमिश्नरेट वाला राज प्रसाद, जल महल आदि को राजधानी बसाने के लिए मुफ्त में सरकार को दिए। इसके अलावा जयपुर रियासत में अनेक किले, महल, शिकारगाह, तालाब व बांध, भूमि व भवन सरकार को दिए। हवा महल के पास का सवाई मानसिंह टाऊन हॉल दिया जिसमें बरसों तक बिना किराया लिए राजस्थान विधानसभा संचालित होती रही।

महाराजा सवाई मानसिंह योग्य एवं संस्कारवान व्यक्ति थे। वे एक कुशल प्रशासक, राजनीतिज्ञ तथा प्रजा वत्सल राजा थे। उनका जन्म कच्छावा वंश के राजावत कुल में 21 अगस्त 1911 को ईशरदा (सवाई माधोपुर) ठिकाने में हुआ था। उन्हें महाराजा माधोसिंह ने 11 वर्ष की आयु में गोद लिया था। उनका नाम मोर मुकट सिंह था जो बाद में 7 सितम्बर 1922 में सवाई मानसिंह द्वितीय के नाम से जयपुर के अन्तिम शासक बने। आप की शिक्षा अजमेर के प्रतिष्ठित मैयो कॉलेज एवं रोयल मिलिट्री एकेडमी वूलविच में हुई। आप को सेना में लेफ्टिनेंट जनरल का ओहदा प्राप्त था। आप पोलो के विश्व विख्यात दस हैण्डिकैप के खिलाड़ी थे। आप की केपटेन्सी में भारत ने 1957 में पोलो का विश्व कप जीता था। पोलो की उनकी विजय की याद जयपुर का 'पोलो विक्ट्री' सिनेमा हॉल दिलाता है। आप राजप्रमुख, संसद में राज्यसभा सदस्य एवं स्पेन में भारत के राजदूत रहे। 1970 में पोलो खेलते हुए आप का इंगलैण्ड में स्वर्गवास हो गया।

प्राथमिक प्रशिक्षण शिविरों की शृंखला प्रारम्भ

नागणेशिया ढूंढा

श्री क्षत्रिय युवक संघ में उच्च प्रशिक्षण शिविर के उपरान्त दिसम्बर तक सामान्य प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया जाता है। इस वर्ष भी यह शृंखला प्रारम्भ हो गई है। बाड़मेर से 15 किमी दूर नागणेच्या माता के ओरण स्थित नागणेशिया ढूंढा में 15 से 18 जून तक प्रा.प्र.शि. आयोजित किया गया। शिविर में बाड़मेर, गुड़ामालानी, चौहटन, शिव क्षेत्र के 160 से अधिक स्वयंसेवकों ने प्रशिक्षण लिया। शिविर का संचालन राजेन्द्रसिंह भियाड़ (द्वितीय) ने किया एवं व्यवस्था का जिम्मा गणपतसिंह बूठ और रामसिंह उंडखा ने निभाया। शिविर की विदाई के समय संचालक ने कहा कि संघ की संस्कारमयी कर्म प्रणाली द्वारा हमने चार दिन में जो प्रशिक्षण पाया है एवं क्षात्र धर्म का व्यवहारिक अभ्यास किया है वह माता नागणेशिया के आशीर्वाद से हमारे जीवन में उतरे इसी प्रार्थना के साथ माननीय संघ प्रमुख श्री की ओर से आपको विदाई दी जा रही है।

गुजरात में उ.प्र.शि. के बाद पहला प्रा.प्र.शि. 31 मई से 2 जून तक अहमदाबाद ग्राम्य प्रांत के वीरमगांव में संपन्न हुआ। शिविर में काणेटी, मोडासर, महादेवपुरा, रेथल, ददुका, अहमदबाद आदि स्थानों से युवक प्रशिक्षणार्थ पहुंचे। शिविर का संचालन योगेन्द्रसिंह काणेटी ने किया एवं संभाग प्रमुख दीवानसिंह काणेटी के साथ-साथ बटुकसिंह, अर्जुनसिंह आदि सहयोगी के रूप में उपस्थित रहे। शिविर के समापन के अवसर पर स्नेहमिलन रखा गया जिसमें अन्य समाजबंधुओं भी उपस्थित रहे। शिविर की व्यवस्था का जिम्मा रैथल व वासवा गांव के समाज बंधुओं ने संभाला। जालोर संभाग के सिरोही प्रांत स्थित देलदर गांव में 21 से 23 जून तक युवाओं का प्रा.प्र.शि. संपन्न हुआ जिसमें झाड़ोली वीर, डिंगार, मांडाणी, दूदवा, चूली, उथमण, खिंदारागांव, चूरा, देलदर, सुरावा, जैला, भूतगांव, उंदरा, भंवराणी, चांदणा, सिवणा, भेटाला, उखरड़ा आदि गांवों के शिविरार्थी पहुंचे। शिविर का संचालन गणपतसिंह भंवराणी ने किया। शिविर व्यवस्था का दायित्व देलदर के समाज बंधुओं ने संभाला। शिविर संचालक ने विदाई के समय शिविर में पाए प्रशिक्षण को जीवन व्यवहार में ढालने की बात कही। विदाई के उपरान्त स्नेहमिलन रखा गया जिसमें देलदर गांव के महिला, पुरुषों एवं बालक-बालिकाओं ने भाग लिया।

देलदर

21 से 23 जून तक जोधपुर संभाग के शेरगढ़ प्रांत में बस्तवा गांव के गोतावर राय मंदिर में समाज के रोजगार सुदा वरिष्ठ लोगों का शिविर रखा गया जिसमें 70 समाज बंधुओं ने तीन दिन तक संघ की सामूहिक संस्कारमयी कर्मप्रणाली से प्रशिक्षण लिया। शिविर का संचालन केन्द्रीय कार्यकारी प्रेमसिंह रणधा ने किया। शिविर में संघ के प्रति सहानुभूति रखने वाले सहयोगी समाज बंधुओं को संघ की कार्य प्रणाली की प्रायोगिक जानकारी दी गई।

बस्तवा

संभागीय बैठकों में तय हुए कार्यक्रम

उच्च प्रशिक्षण शिविर के बाद आगामी 21 दिसम्बर तक की कार्ययोजना बनाने एवं शिविर आदि सांघिक कार्यक्रम तय करने के लिए विगत दिनों विभिन्न संभागों में दायित्वाधीन स्वयंसेवकों की बैठकें रखी गई। जैसलमेर संभाग की बैठक संभागीय कार्यालय 'तनाश्रम' में 10 जून को संभाग प्रमुख गोपालसिंह रणधा के नेतृत्व में संपन्न हुआ। बैठक में चेलक, सोढोकोर, दामोदरा, भोजराज की ढाणी (रामगढ़), देवीकोट, पनराजसर में शिविरों के प्रस्ताव तैयार किए गए। इनके तीन बालकों के एवं दो बालिकाओं के प्रा.प्र.शि. हैं एवं एक बालकों का मा.प्र.शि. है। शाखाओं की संख्या बढ़ाने के लिए स्थान चिह्नित किए गए एवं पहले लग रही शाखाओं के गुणवत्ता उन्नयन को लेकर बात की गई। प्रांत प्रमुखों से निरन्तर शाखाओं के सम्पर्क में रहने को कहा गया। झिंझनियाली में मूलचंद जी की जयंती समारोहपूर्वक मनाने का भी निर्णय लिया गया। बाड़मेर संभाग की संभागीय बैठक 23 जून को भारतीय ग्राम्य आलोकायन द्वारा संचालित आलोक आश्रम बाड़मेर में संपन्न हुई। संभाग प्रमुख कृष्णसिंह राणीगांव के नेतृत्व में संपन्न बैठक में आलोक आश्रम, राणासर कलां, खबड़ाला, मूलसिंह की ढाणी (ताणु), चौहटन, चोचरा में बालकों के प्रा.प्र.शि. एवं विरात्रा महाविद्यालय में बालिका प्रा.प्र.शि. के प्रस्ताव तैयार किए गए। मा.प्र.शि. के लिए शिव हेतु प्रस्ताव तैयार किया गया। पूज्य तनसिंह जी, आयुवानसिंह जी, नारायणसिंह रेडा के साथ-साथ चांपाजी स्मृति दिवस एवं पाबूजी राठौड़ स्मृति दिवस पर आयोजन करने के स्थान तय किए एवं वहां समारोह पूर्वक मनाने का निर्णय किया गया। इन समारोहों में कौन-कौन वरिष्ठ स्वयंसेवक जाएंगे इसका दायित्व दिया गया। शाखा स्तर पर सभी महापुरुषों के स्मृति दिवस मनाने की चर्चा की गई। वर्तमान में लग रही शाखाओं की समीक्षा की गई एवं नई शाखाओं की संभावना वाले स्थान चिह्नित किए गए। बैठक में सभी प्रांत प्रमुखों सहित अन्य दायित्वाधीन स्वयंसेवक उपस्थित रहे। बीकानेर संभाग की संभागीय बैठक 23 जून को बीकानेर संभागीय कार्यालय 'नारायण निकेतन' में संपन्न हुई। बैठक में संभाग के पांचों प्रांतों में शाखाओं की वृद्धि के लिए मंडल प्रमुखों के दायित्व दिए गए। चुरु प्रांत में चार व शेष प्रांतों में एक-एक प्राथमिक प्रशिक्षण शिविर बालकों के लगाने के प्रस्ताव तैयार किए गए। बीकानेर शहर में एक बालिका प्रा.प्र.शि. एवं पूरे संभाग का एक मा.प्र.शि. (बालक) लगाने का भी निर्णय लिया गया। संघशक्ति, पथप्रेरक के ग्राहक लक्ष्य एवं उनके लिए विज्ञापन लक्ष्य भी लिए गए। संयोमा को लेकर भी चर्चा की गई। विगत 22 दिसम्बर को सत्र के प्रारम्भ में लिए गए लक्ष्यों की समीक्षा की गई एवं शेष रहे लक्ष्यों को हासिल करने पर चर्चा की गई। प्रत्येक प्रांत में यात्रा एवं स्नेहमिलन रखने के लक्ष्य लिए गए। सभी दायित्वाधीन स्वयंसेवकों को रिपोर्ट प्रपत्र सौंपे गए एवं समय पर रिपोर्ट भेजने के निर्देश संभाग प्रमुख रेंवतसिंह जाखासर द्वारा दिए गए।

जोधपुर संभाग की संभागीय बैठक 16 जून को राजपूत छात्रावास ओसियां में केन्द्रीय कार्यकारी प्रेमसिंह रणधा के सानिध्य में रखी गई। संभाग प्रमुख चन्द्रवीरसिंह देणोक ने आगामी छह माह में किए जाने वाले कार्यों यथा शिविर, शाखा, जयंतियां, स्नेहमिलन, संघशक्ति, पथप्रेरक की ग्राहक सदस्यता आदि के बारे में जानकारी दी एवं सहयोगियों की सहायता से प्रस्ताव तैयार किए। जयपुर संभाग की बैठक 25 जून को केन्द्रीय कार्यालय संघशक्ति में माननीय संघ प्रमुख श्री के सानिध्य में रखी गई। इसमें संभाग के सभी प्रांत प्रमुखों सहित 45 दायित्वाधीन स्वयंसेवक उपस्थित हुए। प्रति प्रांत एक प्रा.प्र.शि. एवं संभाग स्तर पर एक मा.प्र.शि. व एक बालिका शिविर तय किए गए। शिविरों के अतिरिक्त शाखाओं को लेकर चर्चा की गई। जयंतियों, स्नेहमिलनों, यात्राओं आदि के कार्यक्रम बनाए गए। संघशक्ति, पथप्रेरक के 1100 नए ग्राहक सदस्य बनाने का लक्ष्य लिया गया। आगामी 17 अक्टूबर 2019 से 17 अक्टूबर 2020 तक श्रद्धेय आयुवानसिंह जी के जन्म शताब्दी वर्ष के संबंध में प्रांतवार कार्यक्रम तय किए गए। इसी क्रम में 'आशा डेयरी' थराद में बनासकांठा प्रांत की बैठक 25 जून को रखी गई। संभाग प्रमुख विक्रमसिंह कमाणा के निर्देशन में संपन्न बैठक में 23 नई शाखाएं प्रारम्भ करने का लक्ष्य लिया गया। मंडल बार जयंती कार्यक्रम तय किए गए। बनासकांठा के उन 40 गांवों को सूचीबद्ध किया गया जिनमें विगत दिनों संघ का कोई कार्यक्रम नहीं हुआ। उनमें संघ का संदेश पहुंचाने की योजना बनाई गई।

संपादकीय Column

'प्रभावी विपक्ष को तरसता भारत'

भारत में संसदीय लोकतंत्रात्मक शासन व्यवस्था है। इस व्यवस्था में संसद में बहुमत प्राप्त दल देश की सत्ता चलाता है वहीं संसद के शेष सदस्य संयुक्त रूप से विपक्ष की भूमिका निभाकर सरकार को नियंत्रित करते हैं। भारत में मजबूत विपक्ष की एक लंबी परम्परा रही है। ऐसा विपक्ष जिसने कभी भी संसद में अपनी न्यून सदस्यता को अपनी भूमिका पर हावी नहीं होने दिया। आजादी के तुरंत बाद जब नेहरू जी के नेतृत्व में संसद में कांग्रेस का लगभग एकाधिकार था उस समय भी विपक्ष ने किसी प्रकार की लाचारी दिखाए बिना अपना दायित्व बखूबी निभाया। इंदिरा गांधी के समय आपात काल में भारतीय विपक्ष ने अपनी भूमिका को बखूबी निभाने का प्रयास किया और उसके लिए जेल यात्राओं को भी स्वीकार किया। वर्तमान में सत्तासीन भारतीय जनता पार्टी अपनी दो की संख्या में भी विपक्षी दल के रूप में अपनी उपस्थिति दर्ज करवाती रही लेकिन विगत वर्षों में विपक्ष बनी कांग्रेस पार्टी शायद लगातार दो बार विपक्ष की भूमिका में आकर भी विपक्ष की भूमिका को भली प्रकार ओढ़ नहीं पाई है। संसदीय लोकतंत्र में विपक्ष से रचनात्मक भूमिका की अपेक्षा की जाती है। ऐसी भूमिका जो सरकार को राष्ट्र के लिए श्रेष्ठतम करने को मजबूर करे। विपक्ष का कार्य केवल आलोचना करना नहीं होता बल्कि रचनात्मक आलोचना करना होता है। जिस प्रकार सरकार से यह अपेक्षा की जाती है कि वह स्वयं के हितों पर राष्ट्र के हितों को सर्वोपरि माने वैसे ही विपक्ष से भी यह अपेक्षा की जाती है कि वह अपनी स्थिति को स्वीकारते हुए स्वयं से ऊपर राष्ट्र को माने। लेकिन भारतीय संसद के वर्तमान विपक्ष की भूमिका को देखकर नहीं लगता कि वह रचनात्मक है एवं उसके लिए राष्ट्र प्रथम है। विपक्ष का व्यवहार एक अहंकारी बच्चे का सा लगता है जो यह स्वीकार ही नहीं करता है कि वह विपक्ष में है बल्कि जिद पूर्वक यह मानता है कि हम ही सही थे, हम ही सही हैं और हम ही सही हो सकते हैं बाकि सब तो गलत हैं। विगत 21 जून को योग दिवस को दिन कांग्रेस अध्यक्ष राहुल गांधी का ट्वीट उनकी इस मनोवृत्ति को प्रकट करता है। जिस योग दिवस को सरकार ने राष्ट्रीय गौरव का विषय बनाया, संयुक्त राष्ट्र द्वारा जिस दिन को अंतरराष्ट्रीय योग दिवस घोषित कर इस भारतीय ज्ञान की महत्ता को प्रतिपादित किया उसी दिन उस महान परम्परा का मजाक उड़ाना किसी भी प्रकार की गंभीरता का द्योतक नहीं है और वह भी तब जब आपकी पार्टी आपकी ऐसी ही हरकतों के कारण ऐतिहासिक पराभाव तक पहुंच चुकी है। भाजपा नीत सरकार ने विगत वर्षों में उपेक्षित भारतीय मन की पीड़ा को जानकार उसका उपयोग किया। वर्षों से उपेक्षित भारतीय मान बिन्दुओं को अधिकारिक महत्त्व दिया वहीं वर्तमान विपक्ष जब भी अवसर आया उनकी मजाक उड़ाने से नहीं चूका। पूरा संसार भारतीय संस्कृति के एक अंग योग का सम्मान कर रहा है वहीं हमारे विपक्ष के सर्वोच्च नेता उसका मजाक उड़ा रहे हैं और फिर शिकायत भी कर रहे हैं कि भारतीय जन मानस उन्हें गंभीरता से क्यों नहीं लेता? जब बिहार में बुखार से लगभग 200 बच्चे मर गए हों और प्रधानमंत्री उस पर मौन हों तब हमारे विपक्ष के नेता प्रधानमंत्री के इस मौन को मुद्दा बनाकर उन्हें बोलने को मजबूर करने की अपेक्षा योग पर बेहूदा टिप्पणी कर अपनी किस रचनात्मकता का परिचय दे रहे हैं? परमेश्वर जाने। बच्चों की मौत पर जब किसी क्रिकेट खिलाड़ी के अंगूठे की मोच प्राथमिकता पाती है या बच्चों की मौत की समीक्षा करने गए मंत्री ऐसी महत्त्वपूर्ण बैठक में भी क्रिकेट मैच का स्कोर जानने को बेताब हों तब विपक्ष यदि उनकी इस बेपरवाही को मुद्दा बनाने की अपेक्षा राष्ट्र का स्वाभिमान बढ़ाने वाले मानदंडों का ही मजाक बनाए तो इसे भारतीय लोकतंत्र का दुर्भाग्य ही कहा जाएगा। ऐसा पहली बार हुआ हो ऐसा भी नहीं है। जब समूचा राष्ट्र सेना के शौर्य पर गर्व कर रहा था और सत्तारूढ़ दल उस गर्व की नाव में बैठकर चुनावी वैतरणी पार कर रहा था तब विपक्ष उस गर्व को भंग करने के वक्तव्य देकर अपनी राजनीतिक अपरिपक्वता का परिचय दे रहा था। हद तो तब होती है जब एक चुनी हुई सरकार अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भारतीयता का मान बढ़ाने वाले योग दिवस को बड़े ही अनमने ढंग से मनाती है। अपने आपको भारतीय संस्कृति के निकट बताने वाले मुख्यमंत्री उस योग दिवस की अपेक्षा संगीत दिवस की बधाई देना पहले जरूरी समझते हैं। राज्य की राजधानी में होने वाले सरकारी कार्यक्रम में सरकार का कोई चुना हुआ प्रतिनिधि जाने से परहेज करता है तो लगता है कि इनका और उनका भारत अलग-अलग है। यह नकारात्मकता वर्तमान विपक्ष के पराभाव तक सीमित हो तो भी क्षम्य है लेकिन दुर्भाग्य यह है कि यह नकारात्मकता संसदीय लोकतंत्र पर भारी पड़ रही है जिस पर आजाद भारत के रहनुमा गर्व करते हैं। अभी समाचार पत्रों में कहीं खबर छपी कि एक विधायक महोदय ने विधानसभा में प्रश्न लगाया है कि राज्य सरकार के कर्मचारी देश के एक सांस्कृतिक संगठन के सदस्य बन सकते हैं या नहीं। यह नकारात्मकता नहीं तो क्या है कि एक संगठन जो वंचित लोगों की शिक्षा के लिए काम करता है। देश में आने वाली प्राकृतिक आपदाओं के विरुद्ध बचाव कार्यों में बढ़-चढ़ कर भाग लेता है। समाज के विभिन्न वर्गों के बीच जोहक तत्व का काम करने को प्रेरित करता है,

(शेष पृष्ठ 7 पर)

खरी-खरी...

इस सम्मान के मायने!

लाल बहादुर शास्त्री के प्रधानमंत्री काल के बारे में कहा जाता है कि अमेरिका द्वारा घटिया गेहूं भेजने पर उन्होंने देशवासियों से एक समय उपवास करने का आह्वान किया और अपने नैतिक बल में राष्ट्रीय स्वाभिमान का योग करते हुए उसे राष्ट्रीय बल बनाकर जवाब दिया। यह इस बात का प्रतीक है कि यदि राष्ट्र के नैतिक बल से पनपाने से स्वाभिमान किसी भी संकट से मुकाबला करने की शक्ति प्रदान करता है। यह बल तब पैदा होता है जब हम राष्ट्र के लिए कुछ देना प्रारम्भ करते हैं, छोड़ना प्रारम्भ करते हैं। हमारा यह देना या छोड़ना राष्ट्र के लिए दान नहीं बल्कि उसके चरणों में तुच्छ सा समर्पण होता है। किसी भी राष्ट्र का ऐसा समर्पण ही उस राष्ट्र को महान बनाता है। जनता के ऐसे ही समर्पण ने उसके राष्ट्र नायकों को राष्ट्र विरोधियों से लड़ने की ताकत दी और वे महान बन गए। लेकिन दुर्भाग्य से वर्तमान लोकतांत्रिक प्रणाली में राष्ट्र की अपेक्षा व्यक्ति महत्त्वपूर्ण होता गया और लोक कल्याणकारी राज्य की अवधारणा की विकृत परिभाषा ने राष्ट्र को व्यक्ति के लिए बना दिया जबकि वास्तव में दोनों एक-दूसरे के पूरक होते हैं। लेकिन इस विकृत मानसिकता ने लोक कल्याण की आड़ में व्यक्ति को राष्ट्र की कीमत पर संतुष्ट करना प्रारम्भ किया क्योंकि सत्ता में आने की सीढ़ी तो वोटर होता है और वोट व्यक्ति में बसता है। पश्चिम का दर्शन, जहां व्यक्ति ही सर्वोपरि है, हमारे यहां लागू वर्तमान व्यवस्था का प्रेरक बना और वही प्रेरणा आजादी के बाद बनी सरकारों को राष्ट्र पर व्यक्ति को तरजीह देने को प्रेरित करती रही। विजातीय विचारधारा एवं सत्तासीनों की स्वार्थपूर्ण मनोवृत्ति ने राष्ट्र के संसाधनों की बंदर बांट की, जिसका परिणाम आज हमारे सामने विभिन्न समस्याओं के रूप में उपस्थित है। हालांकि लाल बहादुर शास्त्री का उपर्युक्त उदाहरण ऐसे वातावरण में हमारे लिए प्रेरणादायी है। ऐसा ही एक उदाहरण 2014 में बनी केन्द्र सरकार के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने पेश किया था। उन्होंने घरेलू गैस सिलेण्डर पर मिलने वाली सब्सिडी को छोड़ने का सक्षम लोगों से आह्वान किया था और परिणाम स्वरूप अनेक लोगों ने ऐसा किया भी था। सरकार द्वारा उस दौरान पेश आंकड़ों के अनुसार राष्ट्र के करोड़ों रुपए इस कदम के द्वारा बचाए गए। यह भी राष्ट्र के नैतिक बल को ऊपर उठाने का एक कदम था क्योंकि सब्सिडी एक प्रकार की सहायता होती है जो सरकार द्वारा नागरिक को दी जाती है। लेकिन जिसे सहायता की जरूरत ही ना हो उसे भी सहायता देना एक प्रकार से सहायता की मूल भावना पर चोट करना ही है। ऐसे में स्वैच्छा से ऐसी सहायता को छोड़ने की प्रेरणा देना एक श्रेष्ठ प्रेरणा है और उसकी अनुपालना करना राष्ट्रीय चरित्र को बलबती बनाती है। लेकिन उन्हीं नरेन्द्र मोदी ने इस नई सरकार के बनते ही पहली ही केबिनेट बैठक में ठीक इसके विपरीत काम किया है। विगत सरकार ने किसान सम्मान निधि नामक योजना प्रारम्भ की थी जिसके तहत कुछ चुने हुए किसानों को सरकार प्रतिवर्ष 6 हजार रुपए देगी। यह राशि संबंधित किसान के खाते में चार समान किश्तों (1500-1500 रुपए) जमा की जाएगी। देश में समाचार पत्रों में प्रायः किसानों की आर्थिक तंगहाली के कारण आत्महत्या के समाचार प्रकाशित होते रहते हैं, ऐसे में किसानों को सरकार द्वारा यह छोटा सा सहयोग भी सहायता प्रदान करता है लेकिन वर्तमान सरकार ने अपनी पहली ही केबिनेट बैठक में फैसला लिया कि यह राशि प्रत्येक किसान को दी जाएगी। 6000 रुपए का यदि हिसाब करें तो यह प्रतिदिन लगभग साढ़े सोलह रुपए होते हैं। प्रतिदिन साढ़े सोलह रुपए मिलना उस गरीब किसान के लिए कुछ सहायक हो सकता है जिसे पैसे के अभाव में मौत को गले लगाना पड़ता है लेकिन देश के अन्य किसानों को उनके सम्मान के नाम पर साढ़े सोलह रुपए प्रतिदिन देना क्या वास्तव में उनका सम्मान है? आसानी से अपनी जीविका चलाने लायक कमा लेने वाले व्यक्ति के लिए यह साढ़े सोलह रुपए कोई गणनीय राशि नहीं है लेकिन यही राशि जब गुणित होकर सभी किसानों को दी जाएगी तब कुछ मिला कर राष्ट्र के खजाने पर कितना भार पड़ेगा यह विचारणीय है। किसान के सम्मान के नाम पर खाते-पीते व्यक्ति को साढ़े सोलह रुपए के लिए सरकारी सहायता का मोहताज बनाना क्या राष्ट्र के लिए समर्पण सिखाने का अभ्यास है या फिर आजादी के बाद से चली आ रही उस परम्परा को आगे बढ़ाना है जिसके तहत राष्ट्र के संसाधनों को अपनी छवि सुदृढ़ करने के लिए या अपने वोटर्स को रिश्वत देने के लिए लुटाया जाता रहा है। (शेष पृष्ठ 7 पर)

प्रताप जयंती समारोह में अशोकसिंह परमार का सम्मान

अहमदाबाद के निकट गोधावी स्थित श्री सूरज बा राजपूत भवन में 6 जून को आयोजित प्रताप जयंती समारोह में गुजरात सरकार में शिक्षा विभाग के उप सचिव पद से सेवानिवृत्त एवं हजारों युवाओं को विभिन्न सरकारी सेवाओं में जाने की प्रेरणा देने वाले अशोक सिंह परमार का सम्मान किया गया। गुरुजी के नाम से विख्यात अशोक सिंह अहमदाबाद में समाज द्वारा संचालित सिविल सेवा प्रशिक्षण स्थल के प्रेरक हैं एवं समाज के युवाओं को सरकारी सेवाओं में जाने को प्रेरित करते रहते हैं। जयंती समारोह में अपने सम्मान के अवसर पर उन्होंने कहा कि कम साधनों के बावजूद हमारे युवा गुजरात की प्रशासनिक सेवाओं में अपना स्थान बना रहे हैं यह हमारी संघर्ष करने की वृत्ति का ही परिणाम है। उन्होंने कहा कि आज शासन प्रशासन की मुख्य धूरी सिविल सेवा के अधिकारी है। नेता तो प्रकट में अगुवा दिखाई देते हैं लेकिन वास्तव में सत्ता का संचालन तो सिविल सेवा के अधिकारी ही करते हैं। उन्होंने कहा पूज्य तनसिंह जी द्वारा प्रदत्त मार्ग हमें मानसिक एवं आध्यात्मिक रूप से सुदृढ़ बनाता है। इस सुदृढ़ता के बल पर हमें शासन प्रशासन का हिस्सा बनकर रजपूती धर्म निभाना चाहिए। उन्होंने कहा कि गुजरात सचिवालय में अभी 300 छोटे-बड़े कर्मचारी अधिकारी राजपूत हैं और वे प्रति तीसरे शनिवार साथ बैठ कर चाय पीते हैं, अपनी सामाजिक उपयोगिता पर चर्चा करते हैं। इस भाव के विस्तार की आवश्यकता है। जयंती समारोह को संभाग प्रमुख दीवानसिंह काणेटी, साणंद तालुका पंचायत प्रमुख जयश्री बा बाघेला, अहमदाबाद रैंज के आई.जी. पुलिस ए.के. जडेजा आदि ने संबोधित किया। राजपूत विकास ट्रस्ट की आगामी दो वर्ष के लिए कार्यकारिणी गठित की गई। प्रताप जयंती के अवसर पर 6 जून को जैसलमेर के नाचना कस्बे में समारोह का आयोजन किया गया जिसमें आसपास के गांवों से बड़ी संख्या में विभिन्न समाजों के लोग शामिल हुए। समारोह से पहले वाहन रैली का आयोजन किया गया। फोर्ट चौक नाचना में आयोजित समारोह को बालोटा धाम के महंत निरंजन भारती, विक्रमसिंह नाचना, पूर्व विधायक छोटूसिंह, शैतानसिंह, आरएसएस के चिरंजीलाल सोनी, गोपालसिंह, कूंपसिंह पातावत, तेजाराम अवाय, प्रतापसिंह टेपू, राजेन्द्रसिंह भिंयाड आदि ने संबोधित किया। सभी ने महाराणा प्रताप के जीवन से प्रेरणा लेने का आह्वान किया। संचालन रविराजसिंह अवाय ने किया।

राव राजा कल्याणसिंह की 133वीं जयंती मनाई

आधुनिक सीकर के निर्माता राव राजा कल्याणसिंह की 133वीं जयंती 20 जून को सीकर के जैन स्कूल सभागार एवं प्रधानजी के जाव में मनाई गई। राजकुमार हरदयालसिंह त्रैलोक्य राज्यलक्ष्मी ट्रस्ट, श्री राजपूत सभा एवं सर्व समाज की ओर से जैन स्कूल सभागार में कार्यक्रम रखा गया जिसे राजस्थान सरकार के केबीनेट मंत्री प्रतापसिंह खाचरियावास, शिक्षा मंत्री गोविन्दसिंह डोटासरा, पूर्व विधानसभा अध्यक्ष दीपेन्द्रसिंह शेखावत, पूर्व विधानसभा उपाध्यक्ष राव राजेन्द्रसिंह, पूर्व विधायक प्रेमसिंह बाजोर, नगरपरिषद सभापति जीवण खां, पूर्व विधायक रतन जलधारी, राजकुमारी शर्मा आदि ने संबोधित किया। वक्ताओं ने राव राजा साहब द्वारा सीकर में सर्व समाज की शिक्षा, चिकित्सा एवं सीकर के वर्तमान स्वरूप के लिए किए गए कार्यों को याद किया एवं उनके आदर्शों पर चलने का आह्वान किया। शिक्षा मंत्री डोटासरा ने उनकी स्मृति में भवन बनाने के लिए राज्य सरकार से 25 लाख रुपये स्वीकृत करवाने की घोषणा की। उन्होंने कहा कि इस प्रकार के कार्यक्रम कर आने वाली पीढ़ी को उनके आदर्शों से अवगत करवाया जाना चाहिए। परिवहन मंत्री ने उनके सर्वधर्म एवं सर्वजाति समावेशी स्वभाव से प्रेरणा लेने की बात कही। सभापति जीवण खां ने नगर परिषद के नए भवन का नाम राव राजा कल्याणसिंह के नाम से किए जाने की जानकारी दी। समारोह में बालिका शिक्षा में योगदान के लिए वाहिद चौहन को महाराव शेखाजी अलंकरण के तहत एक लाख रुपए का पुरस्कार दिया गया। वाहिद चौहान ने विनम्रता पूर्वक राशि लौटाते हुए कहा कि उन्होंने राव राजा साहब के बालिका शिक्षा के सपने को आगे बढ़ाने का प्रयास किया है। 12 अंतरराष्ट्रीय खिलाड़ी एवं 150 से अधिक राष्ट्रीय खिलाड़ी तैयार करने वाले बास्केटबाल कोच भंवरसिंह शेखावत को राव राजा कल्याणसिंह रत्न पुरस्कार के तहत 51 हजार भेंट किए गए। श्री कल्याण आरोग्य सदन की चिकित्सा सेवाओं के लिए स्वर्गीय सांवरमल मौर को मरणोपरांत सम्मानित किया गया। पूर्व विधानसभा उपाध्यक्ष राव राजेन्द्रसिंह ने इस अवसर पर दो नए पुरस्कारों राजकुमार हरदयालसिंह अलंकरण (51 हजार) व युवरानी त्रैलोक्य राजरानी पुरस्कार (51 हजार) की घोषणा की जो क्रमशः युवाओं एवं युवतियों को दिए जाएंगे। पर्यावरण संरक्षण में योगदान के लिए निरंजन व सुमित्रा पारीक एवं जैवीक खेती को प्रोत्साहन के लिए कानसिंह निर्वाण व सुशीला राठौड़ को सम्मानित किया गया। स्वागताध्यक्ष व ट्रस्टी पवन मोदी तथा संयोजक चितरंजन सिंह ने सबका आभार जताया।

दूसरी तरफ प्रधानजी का जाव में परिवहन मंत्री प्रतापसिंह, उच्च शिक्षा मंत्री भंवरसिंह भाटी, विधायक राजेन्द्र गुढा, पूर्व विधायक मनोज न्यांगली आदि की उपस्थिति में राजपूत महासभा सीकर की तरफ से जयंती मनाई गई। कार्यक्रम में शहीद वीरांगनाओं के साथ-साथ शिक्षा, कला, साहित्य व खेल जगत की प्रतिभाओं का सम्मान किया गया। सीकर जिले में राजपूत समाज की पहली जिला परिषद सदस्या स्व. कमल कंवर पाटोदा के सम्मान के क्रम में उनके पति भंवरसिंह पाटोदा का सम्मान किया गया।

सम्राट अशोक

कलिंग से युद्ध के बाद कलिंग की स्वाधीनता तो अवश्य समाप्त हो गई परन्तु युद्ध की हृदय विदारक हिंसा और भीषण रक्तपात ने सम्राट अशोक को विचलित कर दिया। युद्ध के बाद युद्ध स्थल और आसपास के क्षेत्र में सैनिकों के शव ही शव दिखाई दे रहे थे, घायल सैनिक पीड़ा से कराह रहे थे, गिद्धों ने मृत सैनिकों व घायल सैनिकों के शरीर पर अधिकार जमा लिया था। कलिंग में अनेक ऐसे परिवार हो गए जिनके परिवार में केवल विधवा महिलाएं व बच्चे बाकी बचे थे। सम्राट अशोक युद्ध जीत चुके थे पर किस मूल्य पर? यह प्रश्न उनके हृदय को निरन्तर झकझोर रहा था। अशोक पश्चाताप की अग्नि में जल रहे थे। ऐसे समय में सम्राट अशोक बौद्ध भिक्षु उपगुप्त के सम्पर्क में आए। अशोक ने प्रतिज्ञा की कि साम्राज्य विस्तार के लिए अब वह भविष्य में कभी भी शस्त्र ग्रहण नहीं करेगा। अब भेरी घोष के स्थान पर धर्म घोष का शान्ति नाद चारों तरफ फैल गया। अशोक की इस घोषणा के साथ ही मगध साम्राज्य के राज्य विस्तार का वह दौर समाप्त हुआ जो हर्यंक वंश के बिम्बिसार द्वारा अंग राज्य पर आक्रमण से शुरू हुआ था। अब एक नए युग का सूत्रपात हुआ और यह युग था शान्ति का, धर्म प्रचार का और सामाजिक प्रगति का।

अपने शासन के प्रारंभिक वर्षों में अशोक भगवान शिव का उपासक था। भारतीय इतिहास में यह वह समय था जब दर्शन के क्षेत्र में, धार्मिक मान्यताओं के क्षेत्र में नए-नए सिद्धांत आकार ग्रहण कर रहे थे, विस्तार पा रहे थे। बौद्ध और जैन दर्शन जन साधारण और शासकों को अपनी ओर आकर्षित कर रहे थे। सम्राट अशोक भी बौद्ध आचार्यों के साथ समय व्यतीत करते व चर्चाएं करते थे। ऐसे बौद्ध भिक्षुओं में 'निग्रोथ' व 'मोगली पुततिस्स' प्रमुख थे। अशोक का झुकाव धीरे-धीरे बौद्ध धर्म की ओर हो रहा था। कलिंग युद्ध के बाद उपगुप्त की प्रेरणा से अशोक ने बौद्ध धर्म ग्रहण कर लिया। बौद्ध धर्म ग्रहण करने के बाद अशोक के जीवन में अनेक परिवर्तन आए, वह अहिंसा का प्रबल समर्थक बन गया, अशोक ने साम्राज्य की सारी शक्ति को बौद्ध धर्म के प्रचार-प्रसार में लगा दिया। अशोक ने साम्राज्य के अलग-अलग क्षेत्रों में धर्म प्रचारकों को भेजा, इसी प्रकार विदेशों में भी बौद्ध धर्म के प्रचार के लिए प्रचारकों को भेजा जिनमें उसका पुत्र महेन्द्र व पुत्री संघमित्रा प्रमुख हैं। सम्राट ने स्वयं भी धर्मयात्राएं की, तृतीय बौद्ध संगीति का आयोजन करवाया। यद्यपि अशोक ने व्यक्तिगत रूप से बौद्ध धर्म ग्रहण कर लिया था, उसका उत्साही प्रचारक बन गया था तथापि अपने विशाल साम्राज्य में उसने कहीं भी किसी अन्य धर्म के साथ भेदभाव का व्यवहार नहीं किया, विभिन्न मतों तथा सम्प्रदायों के प्रति वह सदैव उदार रहा। अपनी प्रजा के नैतिक उत्थान के लिए अशोक ने जिन आचारों की संहिता प्रस्तुत की उसे ही अशोक के अभिलेखों में 'धम्म' कहा गया है। एक लोक कल्याणकारी शासक की तरह अशोक ने जन साधारण की सुख सुविधाओं व उनके कल्याण के लिए अनेक प्रकार के कार्य किए। नागरिकों की समस्याओं के समाधान के लिए अनेक प्रकार के अधिकारियों की नियुक्ति की जिनका निरीक्षण सम्राट स्वयं करते थे। अशोक ना केवल एक विजेता साम्राज्य निर्माता ही था वरन् उदारता की मूर्ति, मानवता का पुजारी, महान प्रशासक, नीति निर्माता, धर्म प्रचारक व राष्ट्र निर्माता भी था। प्रजा के कल्याण व उत्थान के लिए जीवन पर्यन्त कर्मरत रह कर लगभग 37 वर्षों तक शासन करने के बाद 237 ई.पू. में सम्राट अशोक मृत्यु को प्राप्त हुए। भारत के इतिहास में ही नहीं बल्कि संसार के इतिहास में सम्राट अशोक का नाम एक नक्षत्र की तरह सदैव चमकता रहेगा।

प्रतिभाएं

दिलीप सिंह : पीलवा निवासी तेजसिंह के पुत्र दिलीपसिंह ने कक्षा 10वीं में 87.67 प्रतिशत अंक हासिल किए हैं।

भीमसिंह : कुंडल (बाड़मेर) निवासी बृजराजसिंह के पुत्र भीमसिंह ने कक्षा 10वीं में 83.33 प्रतिशत अंक हासिल किए हैं।

संजना कंवर : सिवाणा में रह रहे नरपतसिंह देवड़ा की पुत्री संजना कंवर ने 12वीं में 95.20 प्रतिशत अंक हासिल किए हैं।

वगतावरसिंह : मांडाणी (सिरोही) निवासी छैलसिंह के पुत्र वगतावर सिंह के कक्षा 10वीं में 80.33 प्रतिशत अंक हासिल किए हैं।

दीपेन्द्रसिंह : सेवड़ी (जालोर) निवासी दीपेन्द्र सिंह पुत्र फतेह सिंह ने 10वीं में 90.67 प्रतिशत अंक हासिल किए हैं।

युवराजसिंह : जेरण (जालोर) निवासी युवराजसिंह पुत्र जनकसिंह ने 10वीं में 85.50 प्रतिशत अंक हासिल किए हैं।

भवानीसिंह : खिंयासरिया (जोधपुर) निवासी भवानीसिंह पुत्र देवीसिंह ने 10वीं में 81.70 प्रतिशत अंक हासिल किए हैं।

कविता कंवर : डाबड़ी (नागौर) निवासी कविता कंवर पुत्री दौलत सिंह ने 10वीं में 85.50 प्रतिशत अंक हासिल किए हैं।

वीरभद्रसिंह : दूठवा (जालोर) निवासी वीरभद्रसिंह पुत्र ईश्वरसिंह ने 10वीं में 88.83 प्रतिशत अंक हासिल किए हैं।

सुषमा कंवर : महरोली निवासी शंकरसिंह फोजीभाई की पुत्री सुषमा कंवर ने 12वीं कला वर्ग में 88 फीसदी अंक हासिल किए हैं।

गजेन्द्र सिंह : गजेन्द्रसिंह पुत्र ईश्वरसिंह करणी नगर मदनगंज किशनगढ़ (अजमेर) ने 10वीं की परीक्षा में 81.17 प्रतिशत अंक हासिल किए हैं।

सुमन कंवर: गणपतसिंह सिवाणा की पुत्री सुमन कंवर ने 12वीं की कला वर्ग में 82 प्रतिशत अंक हासिल किए हैं। छात्रा ने संघ के तीन शिविर किए है।

दिलीप सिंह : दिलीपसिंह पुत्र शेरसिंह मांगलियों की ढाणी भोपालगढ़ (जोधपुर) ने 12वीं की परीक्षा में 82.20 प्रतिशत अंक हासिल किए हैं।

महेन्द्र सिंह : महेन्द्रसिंह पुत्र हणमानसिंह मूंडियावास (सीकर) ने 10वीं की परीक्षा में 87 प्रतिशत अंक हासिल किए हैं।

मूमल कंवर : मूमल कंवर पुत्री लेखराजसिंह राठौड़ (सवाई माधोपुर) ने 10वीं की परीक्षा में 95.50 प्रतिशत अंक हासिल किए हैं।

महिपाल सिंह : महिपालसिंह पुत्र दलपतसिंह बिठौड़ा कलां (पाली) ने 12वीं की विज्ञान वर्ग परीक्षा में 94.20 प्रतिशत अंक हासिल किए हैं।

सपना कंवर : सपना कंवर पुत्री अर्जुन सिंह भुणास की ढाणी (नागौर) ने 10वीं की परीक्षा में 84 प्रतिशत अंक हासिल किए हैं।

विक्रम सिंह : विक्रमसिंह पुत्र दीपसिंह चावड़ो की ढाणी (जोधपुर) ने 12वीं की कला वर्ग में 92.60 प्रतिशत अंक हासिल किए हैं।

कल्याण सिंह : कल्याणसिंह पुत्र गोरधन सिंह विरोल (जालोर) ने 10वीं की परीक्षा में 81 प्रतिशत अंक हासिल किए हैं।

स्वरूप सिंह : स्वरूपसिंह पुत्र विशनसिंह अरणाय (जालोर) ने 10वीं की परीक्षा में 82.17 प्रतिशत अंक हासिल किए हैं।

वीरेन्द्र सिंह : वीरेन्द्रसिंह पुत्र गिरधारीसिंह जैसास (नागौर) ने 10वीं की परीक्षा में 86 प्रतिशत अंक हासिल किए हैं।

जांनवी कंवर: राजपुरा (सीकर) निवासी विजेन्द्रसिंह की पुत्री जांवनी कंवर ने 12वीं में 82.80 प्रतिशत अंक हासिल किए हैं।

राजीव सिंह : भगतपुरा (सीकर) निवासी कमलसिंह के पुत्र राजीव सिंह ने 10वीं की बोर्ड परीक्षा में 96.00 प्रतिशत अंक हासिल किए हैं।

गौरव शेखावत : विजेन्द्रसिंह राजपुरा जिला सीकर के पुत्र गौरव शेखावत ने 10वीं बोर्ड में 86.80 प्रतिशत अंक हासिल किए हैं।

कृतिका कंवर: बेमला निवासी अर्जुनसिंह की पुत्री कृतिका कंवर ने 10वीं की बोर्ड परीक्षा में 94 फीसदी अंक हासिल किए हैं।

IAS/ RAS
तैयारी करने का राजस्थान का सर्वश्रेष्ठ संस्थान
स्प्रिंग बोर्ड
Spring Board
Springboard Academy, Main Riddi Siddi choraha, Opposite Bank of Baroda, Gopalpura bypass Jaipur
website : www.springboardindia.org

पृष्ठ एक का शेष....

विडंबनाओं...

यदि उस परिवार के मुखिया ने किसी शहर या गांव में रहने लायक भूखंड खरीद लिया है तो भी आपकी सरकार यह कहकर आरक्षण नहीं देती कि आपके पास 100 गज (शहर में) या 200 गज (गांव) में भूखंड है। गांवों में जो लोग पूर्वजों के बनाए मकानों में रह रहे हैं और अब भले ही उनकी आर्थिक स्थिति उन मकानों की मरम्मत करवाने की भी न हो फिर भी वे आपके दिए आरक्षण से वंचित है क्योंकि उस मकान के भूखंड का आकार 2000 वर्ग गज का है। श्रीमानजी आप की सरकार एक वर्ष के लिए आर्थिक आधार पर आरक्षण का प्रमाण पत्र देती है और उसके लिए पीढ़ियों का हिसाब किताब लगाती है। ऐसे में सबसे बड़ी विडंबना यह है कि आप जिस आरक्षण को देकर अपने आपको सराह रहे हैं वह एक मजाक बनकर रह गया है। जिस प्राप्ति के लिए वर्षों तक संघर्ष चला हो, लंबी प्रक्रिया चली हो, कई बार हां या ना हुई हो वह यदि इस प्रकार मजाक बन जाए तो यह पूरी व्यवस्था पर प्रश्न चिन्ह है, निर्णय प्रक्रिया पर प्रश्न चिन्ह है, निर्णय लेने वालों की धरातलीय जानकारी पर प्रश्न चिन्ह है। ऐसे में माननीय मुख्यमंत्री जी आपसे निवेदन है कि आप धरातल से जुड़े सामान्य कार्यकर्ता से शीर्ष तक की यात्रा द्वारा इस मुकाम पर पहुंचे हैं। राजस्थान की हर परिस्थिति से आप वाकिफ हैं ऐसे में इस आरक्षण की अहर्ताओं को तर्क संगत बनाकर केवल संबंधित वर्ष की आय को ही आधार बनाया जाए एवं देश के अन्य राज्यों की तरह आठ लाख की आय के अतिरिक्त शेष सभी अर्हताओं को हटाया जाए। आशा है आप इस विषय की संजीदगी को समझेंगे एवं सकारात्मक निर्णय लेंगे।

नोट : सभी समाज बंधुओं से आग्रह है कि जो भी आर्थिक पिछड़ा वर्ग के आरक्षण के पात्र हैं उनके अधिकतम प्रमाण-पत्र बनावाएं। सक्षम समाजबंधु उनकी सहायता करें एवं प्रशासन के स्तर पर आने वाली बाधाओं को दूर करें। माना कि समाज का अधिकांश वर्ग इसके दायरे में नहीं आता लेकिन हमारी उदासीनता के कारण जो दायरे में आता है वह वंचित न रह जाए, इसके लिए सबको सामूहिक प्रयास करना चाहिए।

पांच महापुरुषों...

कार्यक्रम में कच्छ काठियावाड़ गरासिया समाज के प्रमुख प्रवीणसिंह सोळिया, बलभद्रसिंह, संघ के वरिष्ठ स्वयंसेवक अजीतसिंह धोलेरा, महावीरसिंह हरदासकाबास एवं वयोवृद्ध स्वयंसेवक बलवंतसिंह पांची भी शामिल हुए। व्यवस्था का जिम्मा खरड़ गांव के समाज बंधुओं ने निभाया।

विधायकों...

जालोर के रानीवाड़ा क्षेत्र के सहयोगी विधायक नारायणसिंह देवल से मिले। उच्च शिक्षा मंत्री के जालोर-सिरोही प्रवास के दौरान उनसे भेंट की गई। सभी से इन विसंगतियों को दूर करवाने में सहयोग मांगा गया। सभी ने अपने-अपने स्तर पर सहयोग करने का आश्वासन दिया।

बीकानेर

जैसलमेर

आहोर

जालोर

वीरवर राव चांदाजी की जयंती

प्रतिवर्ष अलग-अलग गांवों में वीरवर राव चांदाजी राठौड़ बलूंदा की जयंती मनाने के क्रम में इस वर्ष 10 जून को 514वीं जयंती पुष्कर के निकट ग्राम कंवरलाई में मनाई गई। निंबार्क पीठाधीश्वर श्री श्री जी महाराज के सानिध्य में संत समताराम, आर.पी.एस.सी. सदस्य शिवसिंह राठौड़, आर.ए.एस. राजेन्द्रसिंह, आर.जे.एस. शक्तिसिंह, आर.ए.एस. समुन्द्रसिंह भाटी, आर.पी.एस. गजेन्द्रसिंह आदि ने अतिथि के रूप में अपना संबोधन दिया। अध्यक्षता गोपालसिंह बलूंदा ने की। वक्ताओं ने बालिका शिक्षा, रूढ़ियों को दूर करने एवं पर्यावरण संरक्षण पर बल दिया। 20 गांवों के चांदावत परिवारों ने इस अवसर पर मृत्यु भोज न करने का संकल्प लिया। प्रतिभाओं एवं सहयोगियों का सम्मान दिया गया। 515वीं जयंती ग्राम गुढ़ा में आयोजित करने का निर्णय लिया।

पृष्ठ 4 का शेष....

प्रभावी विपक्ष...

पूरे राष्ट्र की एकात्मकता का भान करवाता है, केवल उसकी राजनीतिक गतिविधियों के प्रति असहमतियों के कारण आप सत्ता के बल पर उसके सदस्यों को काम करने से रोकना चाहते हैं? आपके पास भी तो आजादी के समय इतना बड़ा संगठन था, लगातार सत्ता में रहने के बावजूद आप उस संगठन को केवल सत्ता प्राप्ति के साधन के रूप में उपयोग करने के अलावा कोई अन्य आयाम नहीं दे पाए और अब अपनी नाकामी छिपाने के लिए किसी अन्य संगठन के प्रति दुर्भावना पूर्वक काम करने की चाह रखते हैं और फिर अपने आपको स्वतंत्रता के पैरोकार भी कहते हैं? इसका अर्थ यह भी कदापि नहीं कि उक्त संगठन खरा सोना है लेकिन यदि वह खरा सोना नहीं है तो आप अपने स्तर पर खरा सोना बनाए, जो थोड़ा बहुत भी सोने का अंश लिए हुए है उसे समाप्त करने पर क्यों तुले हैं? यह नकारात्मकता की पराकाष्ठा है और दुर्भाग्य से मेरे भारत देश का सोशल मीडिया में विपक्ष अभी इसी पराकाष्ठा में जी रहा है। तब ही तो संसद में आपकी उपस्थिति के समय आपकी बॉडी लैग्वेज यह सिद्ध करती है कि आप केवल औपचारिक मजबूरी वश यहां बैठे हैं, शेष आपको यहां कोई मतलब नहीं है और भारतीय विपक्ष की यह दयनीय अवस्था ही भारत की वर्तमान सरकार को स्वैच्छाचारी बनने को खुला छोड़ रही है और इसीलिए 200 बच्चों की मौत पर गंभीरता दर्शाने की अपेक्षा सांसदो को दिए गए भव्य भोज की तस्वीरें शेयर की जाती हैं। इसीलिए गैर राजनीतिक सेना के शौर्य का राजनीतिक लाभ ले लिया जाता है। इसीलिए वैज्ञानिकों की उपलब्धि को इस प्रकार पेश किया जाता है जैसे स्वयं की उपलब्धि हो। लेकिन जैसे कोई धीरे दौड़ने वाला अपनी हार का कारण सामने वाले की तेज दौड़ को बताकर अपनी खीझ को मिटाता है उसी प्रकार वर्तमान विपक्ष अपनी खीझ को मिटाकर संतुष्ट हो जाता है। ऐसे में विपक्ष से इस अनुरोध के अलावा कोई उपाय नहीं है कि इस राष्ट्र की बिगड़ती आर्थिक स्थिति, बढ़ती महंगाई, अलाभकारी होते व्यवसाय, फैलती बीमारियां, सेना के पास सामग्री का अभाव, गरीब-अमीर के बीच बढ़ती हुई खाई आदि अनेक महत्वपूर्ण विषय हैं जिन पर सरकार को श्रेष्ठ करने के लिए मजबूर किया जाना चाहिए। लेकिन यह सब तब हो पाएगा जब आप सेना के बहादुर खोजी कुत्तों पर बेहुदा टिप्पणी करने से फुर्सत पाकर अपनी वास्तविक भूमिका पर ध्यान केन्द्रित कर पाएंगे।

इस सम्मान...

यही प्रति किसान साढ़े सोलह रुपए देने कि अपेक्षा जरूरतमंद किसान को चिह्नित कर उसे अपने पैरों पर खड़े होने में सहायता करने के लिए कुछ अधिक दिया जाता तो क्या उचित नहीं रहता? लेकिन उससे इतने अधिक लोगों की वाही-वाही नहीं मिलती जितनी प्रतिदिन साढ़े सोलह रुपए पाकर सम्मानित होने वाले हर किसान से मिलेगी। तब लगता है कि राष्ट्र की बागडोर संभालने वाले लोग अंदर ही अंदर कितने डरे हुए होते हैं। सरकार की गैस सब्सिडी छोड़ने की अपील से लेकर प्रतिदिन साढ़े सोलह रुपए देने तक की यात्रा भारतीय लोकतांत्रिक व्यवस्था की पोल खोल यात्रा है जो येनकेन प्रकारेण सत्ता सीन होने या सत्ता प्राप्त करते ही अपने आपको उसका ट्रस्टी की अपेक्षा मालिक समझकर लुटाने की वृत्ति की द्योतक है। वास्तविकता तो यह है कि यह राष्ट्र इस राष्ट्र के वर्तमान, भूतकाल एवं भविष्य के नागरिकों का न्यास है और इस न्यास के सफल संचालन के लिए जनता न्यासी के रूप में सत्ता सौंपती है। न्यासी कभी मालिक नहीं होता, वह उस ट्रस्ट की संपत्ति का रक्षक होता है। ट्रस्ट का अर्थ ही विश्वास होता है। जनता सत्तासीनों पर विश्वास कर इस राष्ट्रीय ट्रस्ट को उन्हें सौंपती है लेकिन राष्ट्र का यह दुर्भाग्य है कि सभी न्यासी (ट्रस्ट) इसके मालिक बन बैठते हैं और उसकी संपति को स्वयं की निजी संपति के रूप में प्रयोग में लाते हैं इसीलिए तो इसे इस प्रकार ऊल जुलूल प्रावधानों के माध्यम से लुटाते रहते हैं और जनता भी कैसी नासमझ है जो अपने ही ट्रस्ट में से प्रतिदिन साढ़े सोलह रुपए लेकर अपने आपको सम्मानित महसूस करती है लेकिन प्रश्न फिर भी खड़ा है कि क्या यह सम्मान है?

जालोर, ओसियां, जैसलमेर व बीकानेर में बैठक संपन्न

श्री क्षात्र पुरूषार्थ फाउंडेशन की बैठकों की श्रृंखला में 15 जून को जालोर में जालोर व सिरोही के सहयोगियों की बैठक रखी गई। दोनों जिलों की सहयोगी टीमों के गठन के बाद हुई इस पहली बैठक में कार्य को गति देने को लेकर चर्चा की गई। तहसील स्तर की बैठकों का कार्यक्रम बना एवं सितम्बर माह से पहले सभी तहसीलों में बैठकें कर फाउंडेशन के संदेश को आगे प्रसारित करने का दायित्व स्थानीय टीम को सौंपा गया। आर्थिक पिछड़ा वर्ग आरक्षण की विसंगतियों को दूर करने के लिए राज्य सरकार पर दबाव बनाने हेतु विधायकों से मिलकर इस विषय को विधानसभा में उठाने के लिए आग्रह करने का भी निर्णय लिया गया। इस आरक्षण बाबत अधिकतम आवेदन करने हेतु लोगों को जागरुक करने के लिए सभी उपस्थित संभागीयों ने अपने स्तर पर दस-दस आवेदन करवाने का निर्णय लिया।

15 जून की शाम को राजपूत छात्रावास ओसियां में ओसियां, लोहावट व शेरगढ़ क्षेत्र के आमंत्रित समाज बंधुओं की बैठक का आयोजन किया गया। बैठक में श्री क्षात्र पुरूषार्थ फाउंडेशन की भूमिका बताने के बाद संयोजक यशवर्धन सिंह ने समाज के युवाओं को श्री क्षत्रिय युवक संघ से परिचित करवाने, संवैधानिक मूल्यों के प्रति आदर भाव पैदा करने, संवैधानिक साधनों एवं सरकारी योजनाओं के प्रति जागरूक करने, विभिन्न क्षेत्रों यथा प्रशासनिक, व्यवसायिक आदि में नेतृत्व कर रहे युवाओं के बीच सहयोग, सामंजस्य स्थापित कर उन्हें अधिकतम उपयोगी बनाने, अन्य समाजों के प्रति सम्मान भाव पैदा करने एवं गांव से लेकर राज्य तक के युवा नेतृत्व के बीच सहयोग बढ़ाने को लेकर माननीय संघ प्रमुख श्री के निर्देश पर गठित इस फाउंडेशन की विस्तार से जानकारी दी। सह संयोजक आजाद सिंह ने संगठन की कार्य प्रणाली, दायित्व विभाजन, अब तक हुए कार्य की जानकारी दी। भोजनोपरांत हुई अनौपचारिक चर्चा में संभागीयों के प्रश्नों के माध्यम से विषय को और अधिक स्पष्ट किया गया एवं उपयोगी सुझावों पर चर्चा की गई। रात्रि विश्राम के बाद 16 जून को प्रातः शाखा लगाई गई। शाखा में पूज्य तनसिंह जी के जीवन, उनके साहित्य एवं शाखा के महत्त्व के बारे में चर्चा की गई। ओसियां बैठक के उपरांत केन्द्रीय टीम जैसलमेर के लिए रवाना हुई। जैसलमेर स्थित संघ कार्यालय 'तनायन' में 16 जून की शाम जैसलमेर जिले के आमंत्रित स्वयंसेवक पहुंचे। शाम 6 बजे से रात्रि 10 बजे तक चली बैठक में प्रथम सत्र में केन्द्रीय टीम द्वारा ओसियां की ही भांति संगठन की भूमिका, उद्देश्य, कार्य प्रणाली, संघ से संबद्धता, अब तक की प्रगति से अवगत करवाया गया। भोजनोपरांत द्वितीय सत्र में हुई अनौपचारिक चर्चा में आर्थिक पिछड़ा वर्ग आरक्षण को लेकर विस्तार से चर्चा की गई। संभागीयों को बताया गया कि इस आरक्षण में हमारे साथ दो तरह की परेशानी आ रही है। पहली परेशानी तो इसकी प्रक्रिया की जटिलता है जिसके कारण प्रशासनिक अधिकारी इसके प्रमाण-पत्र बनाने से कन्नी काट रहे हैं। दूसरी परेशानी इसकी अव्यवहारिक अहर्ताएं है। इस आरक्षण की अहर्ताओं में 5 एकड़ से कम कृषि भूमि, 1000 वर्ग फीट से कम शहरी क्षेत्र में 100 वर्ग गज से कम शहरी क्षेत्र में व 200 वर्ग गज से कम ग्रामीण क्षेत्र में आवासीय भूखण्ड आदि अव्यवहारिक शर्तें हैं जिनके कारण वंचित वर्ग का अधिकांश भाग इस आरक्षण का पात्र ही नहीं है। इसको लेकर सरकार में विभिन्न स्तरों पर सम्पर्क साधा जा रहा है। अनौपचारिक चर्चा में तय किया गया कि पोकरण क्षेत्र की अलग बैठक कर अलग टीम बनाई जाएगी। संघ के जैसलमेर संभाग की अलग टीम बनाकर काम किया जाएगा। संभाग के विभिन्न प्रांतों की बैठक तय की गई एवं दायित्व सौंपे गए। 17 जून को प्रातः 6.30 से 7.30 बजे तक शाखा लगाई जिसमें संभागीयों ने अपनी-अपनी पसंद के इतिहास पुरुष के बारे में बताया। जैसलमेर की बैठक के पश्चात् 17 जून को ही बीकानेर की सहयोगी टीम की बैठक रखी गई। अपराह्न 12.30 बजे बीकानेर के तिलक नगर में स्थित संघ कार्यालय नारायण निकेतन में आयोजित बैठक में विगत 23 मार्च की बैठक के बाद गठित सहयोगी टीम के सदस्य शामिल हुए। बैठक में फाउंडेशन के कार्य को बीकानेर में गति देने को लेकर विचार विमर्श किया गया। तहसीलवार बैठकों के दायित्व सौंपे गए। आगामी दो माह में सभी तहसीलों में बैठकें आयोजित कर लेने का निर्णय लिया गया। आर्थिक पिछड़ा वर्ग आरक्षण के लिए विधायकों से मिलने का कार्यक्रम बना। बीकानेर जिले के दोनों मंत्रियों से मिलकर उनके समक्ष पूरा विषय रखने का निर्णय लिया। साथ ही प्रयोग के तौर पर नोखा तहसील में आर्थिक पिछड़े वर्ग आरक्षण हेतु प्रमाण-पत्र के लिए आवेदन भरवाने का शिविर लगाने का भी निर्णय लिया गया। ओसियां व जैसलमेर की बैठक के बाद जोधपुर ग्रामीण एवं जैसलमेर के लिए 10-10 सहयोगियों की कोर टीम गठित की गई।

जोधपुर ग्रामीण टीम

पदमसिंह ओसियां, बलबीरसिंह तापु, आईदानसिंह मालूंगा, दिलावर सिंह केतु, राजेन्द्रसिंह निंबो का गांव, सवाईसिंह तेना, गजेन्द्रसिंह इंदो का बास, नाथूसिंह बापिणी, आईदानसिंह पीलवा, लूणकरणसिंह तेना।

जैसलमेर टीम :

भंवरसिंह साधना, रणवीरसिंह खुहड़ी, जितेन्द्रसिंह पूनमनगर, कंवराजसिंह लुणा खुर्द, शिवेन्द्रसिंह बेरसियाला, गिरधरसिंह जोगीदास का गांव, कंवराज सिंह चांधन, तनेसिंह काठा, जोगराजसिंह सिहड़ार, चन्द्रवीरसिंह मोहनगढ़।

युवाओं की कैरियर मार्गदर्शन कार्यशाला

शिवगंज (सिरोही) में 16 जून को शिवगंज-सुमेरपुर क्षेत्र के युवाओं एवं युवतियों के लिए कैरीयर मार्गदर्शन कार्यशाला रखी गई। कार्यशाला में आई.पी.एस. अमनसिंह राठौड़, आर.ए.एस. राजेन्द्रसिंह सिसोदिया, महावीर सिंह जोधा, आर.पी.एस. भवानीसिंह इन्दा, जितेन्द्रसिंह गिलाकौर, आर.एस.एस. दलपतसिंह गुड़ा केशरसिंह, अम्बिका राणावत, बीडीओ भुवनेश्वरसिंह, भोपालसिंह जोधा आदि ने 500 से अधिक युवाओं एवं युवतियों को रोजगारोन्मुख मार्गदर्शन दिया। सिविल सेवा एवं अन्य सेवाओं की तैयारी के विभिन्न चरणों, आवेदन के तरीकों आदि पर विस्तार से चर्चा की गई। इस आयोजन में राजपूत युवा परिषद शिवगंज-सुमेरपुर ने महत्ती भूमिका निभाई।

श्री संघशक्ति प्रकाशन प्रन्यास (मालिक) के लिए मुद्रक व प्रकाशक लक्ष्मणसिंह द्वारा गजेंद्र प्रिन्टर्स, सांगों का रास्ता, किशनपोल बाजार, जयपुर-302003 (दूरभाष 2313462) से मुद्रित एवं ए/8, तारानगर, झोटवाड़ा, जयपुर- 302012 **(दूरभाष: 2466353)** से प्रकाशित। सम्पादक- लक्ष्मणसिंह। Email:- pathprerak1997@gmail.com, Web site:- www.shrikys.org